

# SCRIBER

(स्क्राइबर)

स्क्राइबर एक तेज धार वाला औजार है। जिसका प्रयोग मार्किंग करते समय लाइन खींचने के लिए किया जाता है। इनके प्वाइन्ट को  $12^\circ$  से  $15^\circ$  के कोण में ग्राइडिंग किया रहता है। भारतीय स्टैंडर्ड (B.I.S) के अनुसार से 125 से 300 मिमी. तक लम्बाई में पाये जाते हैं।

## MATERIAL (मैटीरियल) :-

स्क्राइबर प्रायः हार्ड कार्बन स्टील से बनाया जाता है और इसका प्वाइन्ट हार्ड व टेम्पर किया रहता है।

## TYPES (प्रकार) :-

प्रायः निम्नलिखित प्रकार के स्क्राइबर प्रयोग में लाये जाते हैं -

### 1-STRAIGHT SCRIBER (स्ट्रेट स्क्राइबर) :-

इस प्रकार के स्क्राइबर का एक सिरा सीधा व नुकीला होता है। और इसकी बाडी चैन या रब्रिंग (Rubbing) की हुई होती है। इसका प्रयोग साधारण मार्किंग करते समय लाइन खींचने के लिए किया जाता है।

### 2-BENT SCRIBER (बेंड स्क्राइबर) :-

इस प्रकार के स्क्राइबर एक सिरा सीधा व नुकीला होता है। और दूसरे सिरे का मुठ के कोण में मोड़ कर नुकीला कर दिया जाता है। इसके सिधे सिरे का प्रयोग साधारण लइन खींचने के लिए किया जाता है। और मुड़े सिरे का प्रयोग निम्नलिखित कार्यों के लिए किया जाता है।

(A) किसी जाह पर छोटे-छोटे मापों की छाने लगने के लिए जैसे 1 मिमी, 1.5 मिमी इत्यादि (सर्फेस गेज की सहायता से)

(B) वेच माइनिंग पर कोर जा चक से जाह से वेच से कपड़े साथ चोक करते के लिए (सर्फेस गेज की सहायता से)

(C) किसी बेलनाकार खोखले (Cylindrical Hollow) जाह की अन्दरूनी सतह पर छाने की चगे के लिए।

बेत उठप स्क्राइवर का प्रयोग सर्फेस गेज के साथ व अलग से भी किया जा सकता है।

### ADJUSTABLE SLEEVE SCRIBER (एडजस्टेबल स्लीव स्क्राइवर):-

इस प्रकार के स्क्राइवर में स्लीव (Sleeve) होती है। जिसकी बाड़ी पर मार्किंग की हुई होती है और इसकी छेदी लम्बाई गेज से गोल सुराख (Hole) बना होता है जिसमें माथाण स्क्राइवर को लगाया जा सकता है। और इधर उधर कहीं भी समाप्तोमित (Adjust) करके क्लेम्प किया जा सकता है।

### 4- OFFSET SCRIBER (आफसेट स्क्राइवर):-

आफसेट स्क्राइवर की बरिषिद हाइट गेज के साथ प्रयोग में लाया जाता है। जिससे ब्रुद्धता में मार्किंग की जा सकती है।

### PRECAUTIONS (सावधानियां):-

- 1- स्क्राइवर की रोक की छाह रेच परधी चारिद जिससे छेदी मार्किंग की जाके
- 2- इसकी रोक (Mount) की हाई सर्फेस पर होना ही चाहिए
- 3- यदि इसको प्रयोग में न लाया जा रहा हो तो इसके जाह पर काली इत्यादि लगा कर रखना चाहिए।
- 4- इसका प्रयोग हाई सर्फेस पर नहीं करना चाहिए।

# DIVIDER

(डिवाइडर)

डिवाइडर एक प्रकार का मार्किंग टूल है। इसकी दो टांगें (Legs) होती हैं। जिनके सिरे नुकीले अर्धत रेखा धार वाले होते हैं। ये प्रायः हाई कार्बन स्टील से बनाये जाते हैं। और इनके प्वाइंट को हार्ड व टेम्पर कर दिया जाता है इनको याइलड स्टील से बनाया जा सकता है और प्वाइंट का केस हाई क्वालिटी जा सकता है कार्य के अनुसार ये साइज में पाये जाते हैं जैसे 100, 150, 200 मि.मी इत्यादि

SIZE (साइज) :- डिवाइडर का साइज उसकी रिबट या पिबट पिन के सेन्टर से प्वाइंट तक की दूरी से दिया जाता है। जैसे डिवाइडर स्पिंग टाइप 150 मिमी

TYPES (प्रकार) :- डिवाइडर प्रायः निम्न लिखित प्रकार के पाये जाते हैं।

SPRING JOINT DIVIDER (स्प्रिंग ज्वाइंट डिवाइडर) :- इस प्रकार के डिवाइडर में उनकी दोनों टांगों को एक चपटे स्पिंग द्वारा जोड़ा है और दोनों टांगों को नट व स्क्रू की सहायता से समायोजित (मैजुस्ट) किया जा सकता है।

स्प्रिंग की लचक होने के कारण इसके द्वारा आसानी से शुद्ध माप ली जा सकती है इस प्रकार के डिवाइडर का प्रयोग वर्क शॉप में अधिकतर किया जाता है।

FIRM JOINT DIVIDER (फर्म ज्वाइंट डिवाइडर) :- इस प्रकार के डिवाइडर में इनकी दोनों टांगों को एक रिवेट और वाशा की सहायता से जोड़ा जाता है इसको केवल हाथ की सहायता से खोला या बंद किया जाता है इसमें स्क्रू व नट का प्रबंध नहीं रहता है इस प्रकार के डिवाइडर का प्रयोग रिपिंग ज्वाइंट डिवाइडर की अपेक्षा कम किया जाता है।

USES (प्रयोग) :- एक शीप में डिवाइडर प्रायः निम्नलिखित कार्यों के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं।

- 1- किसी जाब की सरफेस पर चाप (Arc) या वृत्त (Circle) खींचने के लिए।
- 2- किसी जाब की सरफेस पर खिंची हुई लाइन को बराबर भागों में बांटने के लिए।
- 3- स्टील रूल से चाप को जाब पर सम स्थानान्तर कटने के लिए।

PRECAUTIONS (सावधानियाँ) :-

- 1- डिवाइडर के प्वाइंट तेज धार वाले होते हैं।
- 2- यदि डिवाइडर के प्वाइंट घिस जाये तो उसे अलग ठसग ग्राइंडिंग नहीं करना चाहिए बल्कि दोनों को एक साथ मिलकर ग्राइंड करना चाहिए जिससे प्वाइंट छोटे पड़े नहीं होते हैं।
- 3- फर्म ज्वाइंट की रिवेट में अधिक कड़ी हुई और अधिक टिकी होनी चाहिए।
- 4- यदि इसका प्रयोग न किया जा रहा हो तो इसको तेल या ग्रीस लगा कर रखना चाहिए।

# TRAMMEL

(ट्रैमल)

INTRODUCTION (परिचय):- इसका प्रयोग बड़े साइज के वृत्त व चाप की मार्किंग करने के लिए किया जाता है। ये कार्य के अनुसार 15 से 50 से. मी. तक पाये जाते हैं।

CONSTRUCTION (बनावट):- इसकी बनावट में एक स्टील की सड़ दंड (ROD) होती है जिसे बीम (Beam) कहते हैं। बीम के ऊपर दो स्लाइडिंग हेड होते हैं। जिनको इधर उधर खिसकाया जा सकता है। इन स्लाइडिंग हेडों को कसने के लिए क्लैम्पिंग नट (CLAMPING NUT) लगे होते हैं। स्लाइडिंग हेडों के साथ स्लाइडर फिट किये जाते हैं। किसी-किसी ट्रैमल में एक स्लाइडिंग हेड के साथ कैरियर (CARRIER) भी जुड़ा रहता है। जिसके साथ सूक्ष्म एडजस्टमेंट (FINE ADJUSTMENT) भी किया जा सकता है। क्योंकि इसके साथ एडजस्टमेंट स्क्रू भी फिट रहता है। स्लाइडिंग हेड को क्लैम्पिंग नट की सहायता से बीम पर कहीं पर भी माप के अनुसार कसा जा सकता है और कैरियर की सहायता से सूक्ष्म एडजस्टमेंट कर सकते हैं। इस भी माप स्टील रूल से लिया जाता है।

PRECAUTIONS (सावधानियाँ):-

- 1- ट्रैमल के स्लाइडर के प्वाइंट तेज धार वाले होने चाहिए
- 2- समय-समय पर ट्रैमल को तेल या ग्रीस लगा देनी चाहिए जिससे इसको जंग लगने से बचाया जा सके।